प्रथम अध्याय

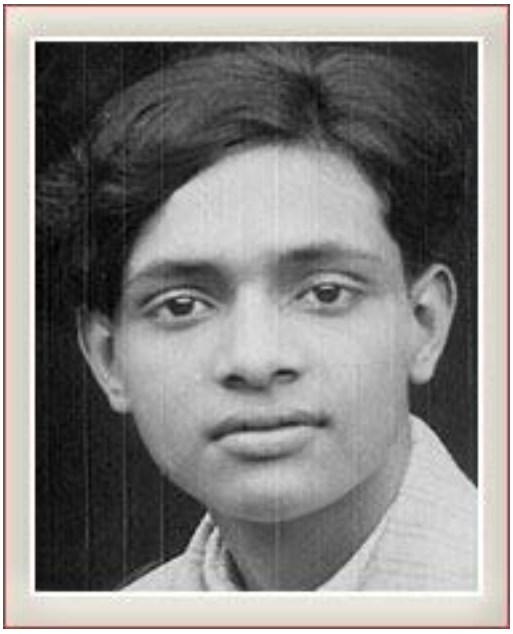

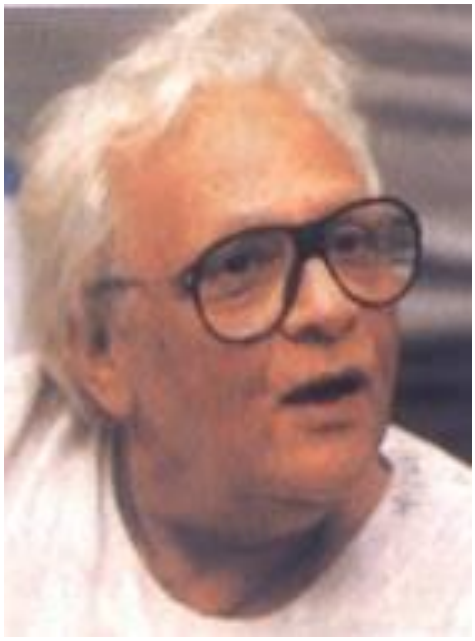

डॉ० राही मासूम रज़ा

प्रथम अध्याय

डॉ० राही मासूम रज़ा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

- जन्म
- शैशवावस्था
- पारिवारिक परिवेश
- शिक्षा
- कृतित्व

डॉ० राही मासूम रज़ा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

राही मासूम रजा हिन्दी साहित्य जगत के मूर्धन्य साहित्यकार, रचनाकार, कवि एवं बहु-प्रसिद्ध लेखक रहे हैं । हिन्दी साहित्य जगत मे डा० राही मासूम रज़ा ने धूम मचा दी । उनके जसा साहित्यकार अपनी एक अलग पहचान बनाता है । राही जी निर्भय होकर किसी भी बात को कहने में सक्षम रहे, अतः उन्हें जो सही लगा, सत्य लगा वही अपने उपन्यासों और कविताओं के माध्यम से समाज को आईने की तरह दिखाया । राही जी अपनी बात को कहने में कभी पीछे नहीं हटे । उन्होंने जो कहा डंके की चोट पर कहा, कभी किसी समाज, धर्म, अथवा वर्ग की चिंता नहीं की । उनके अस्तित्व ने जो स्वीकार किया वही समाज के सामने प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत किया ।

राही मासूम रजा स्पष्टवादी एवं साम्यवादी व्यक्ति थे और अपने इन गुणों के कारण अत्यन्त लोकप्रिय रहे । उनके धर्म-निरपेक्ष राष्ट्रीय दृष्टिकोण के कारण लोग उन्हें पसन्द किया करते थे । अपने इसी व्यक्तित्व के कारण वे भारतीय कम्यूनिस्ट के सदस्य भी हो गये थे । राही जी अपने देश के प्रति अत्यन्त भावुक एवं संवेदनशील रहे हैं उन्हें अपने देश की चिंता थी । राही जी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता को महत्व दिया । जातिवाद एवं धार्मिक भेद-भाव जैसे संकुचित विचारों से उन्हें सख्त नफरत थी उनके ये विचार और मातृभूमि के प्रति लगाव इन पंक्तियों में व्यक्त होता है -

"मेरा नाम मुसलमानों जैसा है,

मुझको क़त्ल करो और मेरे घर में आग लगा दो

लेकिन मेरी रग-रग में गंगा का पानी दौड रहा है

मेरे लहू से चुल्लू भर महादेव के मुँह पर फेंको

और उस जोगी से कह दों .....

महादेव

अब इस गंगा को वापस ले लो ।"0।

डॉ० राही मासूम रजा ने हिन्दू-मस्लिम सम्बन्ध की समस्या, जातिवाद, वर्ण-भेद यथा : उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग तथा जमींदारों एवं पूँजीपतियों द्वारा गरीबों का शोषण आदि अनेक पहलुओं पर गम्भीरता से विचार किया । जिस समय भारत-पाकिस्तान का विभाजन हुआ उस समय सामान्य तथा सर्व-सामान्य सभी साम्प्रदायिकता की आग में जल रहे थे । राही जी भी इन परिस्थितयो से गुज़रे हैं । उन्होंने इसे झेला है, भोगा है । देश विभाजन के समय अनेक परिवार बिखर गये थे इन सभी परिस्थितयों और समस्याओं का राही जी ने अपने उपन्यासों और कविताओं के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत किया ।

राही जी ने सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिस्थितयों का अपनी रचनाओं में खुलकर चित्रण किया और इतनी हिम्मत एक गम्भीर लेखक, चिंतक, अपनी मातृ भूमि से प्रेम करने वाला, सच्चा भारतीय और एक सच्चा हिन्दुस्तानी ही जुटा सकता है । राही जी की सभी रचनाओं में इन परिस्थितयों का चित्रण मिलता है ।

किसी भी साहित्यकार को समझने के लिये उसके जीवन वृत्त का अध्ययन कर लेना चाहिये ।

राही जी का जन्म एवं परिवार

डा० राही मासूम का वास्तविक नाम सैयद मासूम रजा आब्दी था । इनका जन्म । सितम्बर सन 1927 को पूर्वी उत्तर प्रदेश के जिला गाजीपुर के पास एक छोटे से गाँव 'बुधही' में हुआ था । इनके पिता का नाम सैयद बशीर हसन आब्दी तथा माँ का नाम नफ़ीसा बेगम था । इनके पिता जिला गाज़ीपर के ख्याति प्राप्त वकील थे । राही जी का सारा बचपन गंगौली में बीता था । इनका गंगौली से आत्मिक लगाव रहा । ये अपनी माँ के बहुत लाडले थे । राही जी के तीन

भाई और पाँच बहनें हैं । बड़े भाई मूनिस रज़ा, दूसरे भाई अहमद रजा तथा तीसरे भाई मेहदी रज़ा हैं । राही जी के बड़े भाई मूनिस रज़ा अब इस दुनिया में नही रहे और दो भाई उच्च पदों पर कार्य कर अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं ।

राही जी का गंगौली से अटूट सम्बन्ध रहा है तथा अपने गांव, अपने देश की मिटटी, खेत, हरियाली यहाँ के कण-कण से अत्यधिक प्रेम रहा । वे जहाँ भी रहे गँगौली को कभी भूल नहीं पाये । गंगौली में मुहर्रम बडे उत्साह से मनाये जाते थे तथा मुहर्रम राही जी के मनपसन्द त्यौहारों में से एक था इसलिए मुहर्रम अथवा शादी ब्याह जैसे प्रसंगों पर राही जी का गंगौली आना-जाना लगा रहता था ।

डा० राही मासूम रजा के अनुसार उनकी तीन माँएं ह - एक अलीगढ युनिवर्सिटी दूसरी नफीसा बेगम और तीसरी गाज़ीपुर की गंगा । कहा जाता है इस गाँव के राजा का नाम गंग होने क कारण इसका नाम गंगौली पड़ गया गाज़ीपुर की गंगा के प्रति राही जी की पवित्र श्रद्धा रही है और इसीलिये राही जी अपनी वसीयत में लिखते हैं -

"मुझे ले जाके गाज़ीपुर की गोदी में सुला देना
वो मेरी माँ है मेरे बदन का ज़हर पी लेगी
मगर शायद वतन से दूर मौत आए
तो मेरी यह वसायत है
अगर उस शहर में छोटी-सी नदी भी बहती हो
तो मुझे उसकी गोदी में सुलाकर उससे यह कह दो कि यह
गंगा का बेटा आज से तेरे हवाले है
वो नदी भी मेरी माँ, मेरी गंगा की तरह
मेरे बदन का ज़हर पी लेगी ।"02

शैशवावस्था

डा० राही मासूम रजा का बचपन बड़े ही ऐशो आराम से बीता । राही जी का परिवार सुखी सम्पन्न था घर में किसी बात की कमी न थी । हर चीज़ की व्यवस्था थी । घर में सुख सुविधा की प्रत्येक वस्तु मौजूद थी राही जी घर में सभी के लाडले थे । डा० राही मासूम रज़ा को पतंग उड़ाना, क्रिकेट खेलना तथा घुडसवारी का बहुत शौक था । अपने भाई - बहनों में भी राही जी सबके चहेते थे । स्वभाव से राही जी अत्यंत चंचल थे घर में सभी को हैरान तथा परेशान किया करते थे । और इसका सबसे ज़्यादा शिकार इनकी छोटी बहन अफसरी बेगम हुआ करती थी । क्योंकि राही जी इनसे प्यार भी बहुत करते थे ।

राही जी के परिवार का नवाबों की तरह रहन- सहन था । घर में नौकरों की कमी न थी अतः कहा जा सकता है कि यह आब्दी परिवार गाज़ीपुर में बडे शान-शौकत क साथ जीवन व्यतीत करता था । इसी कारण राही जी का बचपन बडे ही ठाट-बाट से बीता । चंचल स्वभाव के कारण दिन भर घर में तितली की तरह घूमते रहते थे और छोटों से लेकर बडों को यहाँ तक कि बूढो औरतों को भी परेशान किया करते थे । बचपन के यह दिन कब पंख लगा कर उड़ गये पता भी नही चला ।

राही जी के जीवन में ऐसी अनेक घटनाएं घटीं जिसने उनके जीवन को हिलाकर रख दिया । इनके जीवन की सबसे बड़ी घटना तब घटी जब पता लगा कि राही जी टाँग में बोन टी० बी० हो गया है । पूरा परिवार राही जी को खुश रखने की कोशिश में लग गया उनकी हर ज़िद पूरी की जाती किन्तु इस बीमारी से राही जी का स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया । इस घटना ने उनके परिवार को ही नहीं उनके जीवन को हिलाकर रख दिया । इस विषय में डा० रिज़वी लिखती हैं - "उनके जीवन को प्रभावित करने वाली घटनाओं में से एक है डा० राही के पैर में बोन टी० बी० का होना । चंचल राही के जीवन का इस पहले हादसे से शरारती जावन में उदासी आना । यह सूनापन ऐसा था जो आख़िर तक उनसे लिपटा रहा ।"03 पूरे घर में जैसे सन्नाटा-छा गया । इस घटना से राही जी एक दम शान्त हो गये । इस घटना का सबसे ज़्यादा दुःख राही जी की माँ नफ़ीसा बेगम को हुआ था ।

राही जी को बचपन से ही पढ़ने का ज़्यादा शौक नहीं था किन्तु अपनी पंगुता को भुलाने के लिये वे किताबों में समय बिताने लगे और धीरे-धीरे ये उनका शौक

बन गया । राही जी ने अनेक भाषाओं हिन्दी, उर्दू, फारसी तथा अंग्रज़ी का ज्ञान प्राप्त किया । राही जी का मन पढ़ने में लगने लगा और उन्होंने प्राइवेट परीक्षाएं देनी शुरु कर दीं ।

राही जी के बचपन के दो दोस्त थे लालू और लडडन । जिसमें लालू राही जी के ज़्यादा क़रीब था । इन दोस्तों की वजह से राही जी को बाहर की सारी ख़बर रहती थी । राही जी को फिल्म देखने का बहुत शौक था "इन दोनों मित्रों को साथ लेकर राही जी अक्सर फिल्म देखने जाते थे । सिनेमा घर में पहले से ही उनके लिये ख़ास व्यवस्था की जाती थी । मासूम जब सिनेमा देखने जाते तो उनके साथ दोस्तों की एक टोली हुआ करती थी । फिल्म देखन जाने का भी एक खास अन्दाज़ हुआ करता था ।"04

राही मासूम रज़ा बचपन से ही स्वाभिमानी थे वो अपने सारे मित्रों का टिकट लेते । अमर टाकीज का मालिक राही जी से पैसे लेता किन्तु बाद में सारे पैसे उनके पिता जी को वापस कर देता किन्तु राही जी के पिता कहते - "इन पैसों पर तुम्हारा हक़ है, मासूम सुनेगा तो उसे बुरा लगेगा ।"05

इस प्रकार राही जी का जीवन बचपन से ही संघर्षों एवं परेशानियों से घिरा रहा किन्तु राही जी बचपन से ही ज़िददी स्वभाव के थे इसलिये उनको जीवन ने चाहे जितना भी पछाड़ा हो किन्तु राही जी आगे ही बढ़ते गए । राही जी को बोन टी० बी० से छुटकारा मिला पर एक पैर से सदा के लिये लंगड़ाने पर मजबूर हो गये ।

पारिवारिक परिवेश

राही मासूम रज़ा के परिवार का रहन-सहन नवाबों से कम नहीं था । डा० राही मासूम रज़ा का भरा-पूरा परिवार था । घर में सभी को बड़ों का अदब और मान-सम्मान करना सिखाया गया था । डा० राही मासूम रज़ा की दादी राजा मुनीर हसन की बहन थी किन्तु वे अपने दूसरे पति के साथ मायके में आकर रहती थीं । राही जी के पिता जिला गाजीपुर के ख्याति प्राप्त वकील थे । घर में दादा-दादी, चाचा-चाची सभी थे । राही जी के तीन भाई और पाँच बहनें हैं । बाखरी बेगम, सरवरी बेगम, अफसरी बेगम, मेहरजहाँ और सबसे छोटी सुरैया । बडे भाई

मूनिस रज़ा, मेंहदी रज़ा तथा अहमद रज़ा हैं । मूनिस रज़ा राही जी के आदर्श रहे । तीनों भाई उच्च पद पर आसीन हो अब अवकाश ले चुके हैं । जिसमें बड भाई मूनिस रज़ा अब इस दुनिया में नहीं हैं ।

कई वर्ष बीमार रहने के कारण राही जी की शिक्षा पर काफी प्रभाव पडा किन्तु राही जी हार नहीं माने । राही जी ने दिन-रात मेहनत करके प्राइवेट परीक्षाएं दीं । राही जी के पिता नहीं चाहते थे कि वे आगे पढ़ें क्योंकि उन्हें राही जी के भविष्य की चिंता थी इसलिये उन्होंने राही जी के लिये गाजीपुर में एक "को-आपरेटिव स्टोर" खुलवा दिया पर राही जी का उसमें मन नहीं लगा । राही जी के पिता को उनकी चिंता होने लगी और उन्होंने राही जी को विवाह के बंधन में बाँधने का फैसला कर लिया । राही जी ने शादी करने से साफ इन्कार कर दिया । कोई राही जी को समझ नहीं पा रहा था कि वो क्या चाहते हैं । किन्तु परिवार वालों के ज़ोर और पिता के कहने पर राही जी ने ये फैसला स्वीकार कर लिया ।

डा० राही मासूम रज़ा की शादी जिला फैजाबाद के पोस्ट मास्टर की बेटी मेहरबानों से कर दी । किन्तु राही जी ने इस शादी को कभी शादी नहीं माना । राही जी के परिवार और मेहरबानों के परिवार में काफी अंतर था मेहरबानों स्वयं को इस आब्दी परिवार के अनुसार ढालने में लग गयीं किन्तु राही जी में कोई सुधार नहीं आया वे अपना अधिकतर समय किताबों में निकालते । राही जी का मेहरबानों के प्रति कभी लगाव नहीं रहा इस बात से मेहरबानों स्वयं को राही जी से कमतर समझतीं और मन मसोस कर रह जातीं । कुछ समय तक ऐसा ही चलता रहा । राही जी में कोई परिवर्तन न आने पर अन्त में बात तलाक तक पहुँच गयी । पर इस बात का भी राही जी को कोई अफसोस नहीं था । "जब तलाक की समस्या उठ खडी हुई तो राही ने खुलेआम कह दिया कि तलाक पिता जी देंगे क्योंकि शादी अब्बा ने पक्की की थी । इस बात पर राही जी दृढ़ थे ।"06

तत्पश्चात मेहरबानों अपने घर चली गयीं किन्तु इस घटना ने मेहरबानों को आत्मनिर्भर बना दिया । दिन रात एक करके पढ़ाई की । कड़ी मेहनत करने के बाद उन्होंने पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की तथा कश्मीर विश्वविद्यालय में प्रवक्ता का स्थान

प्राप्त किया । किन्तु राही जी को अपने किये पर कोई पछतावा नहीं था क्योंकि अभी राही जी को बहुत कुछ करना बाकी था ।

डॉ० राही मासूम रज़ा ने दूसरा विवाह अपनी इच्छा से कर्नल यूसुफ की पत्नी नैयर बेगम से किया । नैयर बेगम के कर्नल यूसुफ से तीन बेटे हैं और राही जी की एक बेटी मरियम है । जो उनकी इकलौती संतान है । मरियम की शादी राही जी के भतीजे यानि बड भाई मूनिस रज़ा के बेटे से हुई है जो एक डाक्टर हैं । मरियम का एक बेटा है जिसका नाम जुहेब है । मरियम अपने पति और बेटे के साथ अमेरिका में रह रही हैं । राही जी के बड बेटे की पत्नी श्री मती पार्वती खान हैं जो एक प्रसिद्ध पॉप गायिका हैं । संतानों के प्रति राही जी एवं नैयर रज़ा जी के प्रेम भाव में कभी कोई अंतर नहीं आया ।

शिक्षा

राही जी की प्रारम्भिक शिक्षा गाजीपुर में हुई । इस्लाम धर्म में पहले कुरआन शरीफ की शिक्षा दी जाती है । राही जी को कुरआन शरीफ की शिक्षा 'मौलवी मुनव्वर' ने दी जो राही जी के पहले गुरु थे ।

डा० राही मासूम रजा ने अपनी उच्च शिक्षा अलीगढ़ विश्वविद्यालय से पूरी की । यहाँ राही जी ने एम० ए० में एडमीशन लिया । कड़ी मेहनत की और एम० ए० प्रथम श्रेणी में पास किया । यहीं से राही जी ने "तिलिस्मए होश-रुबा में हिंदुस्तानी तहज़ीब " पर पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की और बहुत जल्द राही जी ने अलीगढ़ युनिवर्सिटी में अपनी पहचान बना ली । डा० राही मासूम रज़ा ने चार वर्षों तक अलीगढ़ युनिवर्सिटी में अध्यापन का कार्य भी किया ।

व्यक्तित्व

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण उसके विशेष गुण अथवा स्पष्टवादिता क द्वारा होता है । व्यक्तित्व के लिये कोशकार ने कहा है - "व्यक्ति का गुण या भाव अथवा वे विशेष गुण जिनके द्वारा किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता सूचित होती है " उसे व्यक्तित्व कहा

जायेगा ।"07 एक संवेदनशील लेखक समाज में घटित होने वाली घटनाओं प्रभावित होता है जिसे वह बिना डरे, स्पष्ट रुप में अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है । यही निर्भीकता, स्पष्टवादिता, एवं गंभीरता जैसे गुण किसी भी लेखक के व्यक्तित्व की संरचना करते हैं । यह कहना गलत न होगा कि इन्हीं गुणों के समावेश से राही जी के व्यक्तित्व का निर्माण हुआ है ।

डा० राही मासूम रजा एक निडर तथा जिददी स्वभाव के व्यक्ति थे । राही जी ने कभी किसी धर्म अथवा समाज की चिंता नहीं की । वे अपने आकर्षक व्यक्तित्व के कारण हर जवाँ दिल पर राज किया करते थे । राही जी के आकर्षित व्यक्तित्व के सम्बन्ध में डा० कुँवर पाल सिहं जी कहते हैं - "अजनबी शहर, अजनबी रास्ते" इस गज़ल को जब महफिल में गाते तो सुनने वाले मचल उठते और बार-बार फरमाइश करते ।"08

डा० राही मासूम रजा के व्यक्तित्व की अपनी अलग पहचान है और अपने इस व्यक्तित्व के कारण ही राही जी ने अलीगढ़ युनिवर्सिटी में सबको मोह लिया था । राही जी के व्यक्तित्व में एक बेफिक्री थी जिसके रहते वे कहीं भी बोलने में हिचकते नहीं थे जो कहते बेबाक कहते । राही जी बहुत कम समय में उस मुकाम पर पहुँच गये थे जहाँ पर पहुँचने में लोगों की पूरी जिन्दगी गुज़र जाती है । उनकी इस सफलता ने कुछ लोगों को उनका दुश्मन भी बना दिया था । जिसका परिणाम उनका अलीगढ़ युनिवर्सिटी से निकल जाना था ।

राही जी के व्यक्तित्व को विद्रोही के रूप में कबीर के साथ तुलना करते हुए कमलेश्वर लिखते हैं - "राही का पूरा व्यक्तित्व विद्रोही नज़र आता है । राही तानाशाही और सम्प्रदायवाद के खिलाफ थे । धर्म का संस्कृति से क्या सम्बन्ध हो, इसका वे निरन्तर विवेचन करते थे और सही रास्ते निकालने का उपाय बताते थे । इस प्रकार डॉ० राही का व्यक्तित्व संत कबीर जैसा विद्रोही नज़र आता है ।"09

डा० राही मासूम रज़ा के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में राही जी के सहयोग प्रोफेसर वजाहत अली राही मासूम रज़ा के व्यक्तित्व को स्मरण करते हुए लिखते हैं - "सुबह दस-ग्यारह बजे के बाद 30-35 साल का एक आदमी अजब अंदाज से चलता पान वाली दुकान पर आता था । चाल में हल्की सी लंगड़ाहट हुआ करती थी, मेरे महबूब की चाल में है

जो लंगड़ापन " कहने का मतलब ये है कि इस आदमी की चाल का लंगड़ापन एक अदा थी । वह आमतौर पर हल्के रंग और कीमती कपड़ों की शेरवानी पहनता था । कभी रसिक तो कभी कलात्मक कपडा । शेरवानी के बटन खुले होते थे । सब नहीं ऊपर चार पाँच, सलीमशाही जूतों में चाल के लंगडापन 'अदा' वाले तत्व में इजाफा कर देता था । इस आदमी के बालों के लम्बे काले सूर्खे में भी एक अदा हुआ करती थी । बड़ी और गहरी आँखें जिनमें शोखी और शरारत की मौजें साहिल से टकराती रहतीं थीं । क्लीन शेव, खडा नाक-नक्शा पान की दुकान पर पान खाने नहीं आता था क्योंकि उसके हाथों में पान की डिबिया और बटुआ हुआ करता था । वह पान की दुकान पर आकर पूछता था - क्यों भाई हमारी टीम ने कितने रन बनाये, क्रिकेट मैच की ताज़ा तरीन खबरें लेने के बाद ये आदमी रिक्शा लिया करता था । रिक्शे के बीचों बीच इस तरह बैठता था जैसे शाहजहाँ तख्त-ताऊस पर बैठते होंगे ।"10

राही जी की बेबाकी उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विषेशता थी । इसीलिये चाहें जो भी क्षेत्र रहा हो राही जी कुछ भी बोलने में कभी नहीं चूके । राजनीतिक क्षेत्र में राही जी ने अटल बिहारी वाजपेयी से लेकर आडवाणी तक खुले पत्र लिखकर अपनी बेबाकी का सबूत दिया है । यहाँ तक कि राही जी ने अल्लाह मियाँ और श्री राम को भी पत्र लिखकर व्यंग्य व्यक्त किया है । इसके अतिरिक्त राही जी ने धर्म-सम्प्रदाय जैसी संकीर्ण भावनाओं का सदैव विरोध किया उनका व्यक्तित्व मानवता का प्रतीक रहा है इसीलिये जाति-धर्म तथा समाज की चिन्ता किये बिना उन्होंने अपने बड़े बेटे नदीम का विवाह प्रसिद्ध पॉप गायिका पार्वती से किया जो अब पार्वती खान हैं । राही जी की बहू पार्वती के नाम के आगे ख़ान लगाने पर भी लोगों ने बड़ा एतराज़ किया । इस सम्बन्ध में राही जी कहते हैं - "यह पार्वती खान मेरी बहू है । और उस शादी के लिये मैंने यह शर्त लगायी थी कि लड़की मुसलमान नहीं की जायेगी । वह आएशा फ़ातिमा, ज़ैनब या इसी तरह के किसी नाम वाली रही होती तो यह झगड़ा खड़ा न हुआ होता । "11 इसी प्रकार समाज के बन्धनों में न बंध कर ही राही जी ने कर्नल यूसुफ की पत्नी नैयर रज़ा से विवाह कर अपने निर्भीक व्यक्तित्व का परिचय दिया है ।

राही जी को बागी एवं बोल्ड की भी संज्ञा दी जाती है जिसको राही जी नकारते नहीं बल्कि स्वीकार करते हुए कहते हैं - "जो बागी और बोल्ड न हुआ वो लेखक क्या हुआ ? लेखक का सीधा मतलब है जिसकी कलम न तो बिकी हो, न बंधक हो । जो जी में आये कहे, जो जी में आये लिखे । तो मैं तो लेखक हूँ और इसीलिये बागी कहा जाता हूँ । तो एतराज़ नहीं करता ।"12

मृत्यु

डॉ० राही मासूम रज़ा की मृत्यु 15 मार्च सन 1992 को बम्बई में उनके बंगले 'देवदूत 10' में हुई । राही जी की मृत्यु उनके गले में कैंसर हो जाने के कारण हुई ।" दिसम्बर 1991 में पहली बार मेडिकल चेकअप में उनके गले में कैंसर का पता चला ।"13 उस समय राही जी अमेरिका में थे । तत्पश्चात राही जी भारत आ गये अचानक उनकी तबियत बिगड़ गयी क्योंकि कैंसर उनके पूरे गले में फैल चुका था । अभी राही जी को और भी बहुत कुछ करना था किन्तु महज चौंसठ वर्ष की उम्र में राही जी इस संसार को अलविदा कह गये राही जी की अन्तिम इच्छा थी कि उन्हें उनके गाँव गंगौली की मिटटी में समा दिया जाये किन्तु ये न हो सका । उनकी अचानक मृत्यु हो जाने के कारण उन्हें बम्बई के कब्रिस्तान में दफनाया गया । इस सम्बन्ध में अलीगढ़ के प्रोफेसर अपना मंतव्य देते हैं कि :

"राही की ख्वाहिश थी कि उन्हें पैतृक गाँव गंगोली में दफन किया जाये गंगा के किनारे किसी आम के बाग में । महादेव मंदिर के पास क्योंकि उनकी रगों में गंगा का पानी खून बनकर दौड़ रहा था । लेकिन राही बम्बई के किसी कब्रिस्तान में दफन हैं । राही चाहें जहाँ दफन हों मैंने तो उन्हें गंगा के किनारे, उगते हुए सूरज में रेत पर टहलते हुए देखा है । रेत पर उनके निशान मिटते नहीं उन्हें गंगा अपनी गोद में समेट लेती है ।"14

उसी प्रकार राही जी के परम मित्र बलदेव मिर्ज़ा उनकी मौत पर दुःख प्रकट करते हुए कहते हैं -" मैं 15 मार्च 1992 को अपनी ज़िन्दगी का बुरा दिन मानता हूँ और उस दिन ऊपर वाले ने मुझसे मेरा मुकम्मल हिन्दुस्तान छीन लिया ।"15

निष्कर्ष :- राही मासूम रज़ा जैसे महान व्यक्तित्व रखने वाले लेखक मरते नहीं, अमर हो जाते हैं । अभी राही जी को बहुत कुछ करना था । राही जी को आतंकवाद के विरु² जंग लड़ना थी । साम्प्रदायिकता का अंत करना था । राही जी केवल एक लेखक न होकर सच्चे हिन्दुस्तानी भी थे जो हिन्दुस्तानियत को सबसे बड़ा धर्म मानते थे । गंगा-जमुनी संस्कृति राही जी के लिये सर्वोच्च थी । राही जी का इतनी जल्दी इस दुनिया से चले जाना इस हिन्दुस्तान के लिये एक बहुत दुःख की बात है । इस हिन्दुस्तान से एक सच्चा हिन्दुस्तानी चला गया ।

कृतित्व

डा० राही मासूम रज़ा सन 1968 में बम्बई में रहने लगे । राही जी अपनी साहित्यिक गतिविधियों के साथ फिल्मों में लिखने लगे जो कि उनकी आजीविका का प्रश्न बन गया था । बम्बई के जीवन ने राही जी को पूरी तरह से परिवर्तित कर दिया था । उन्होंने अपनी साहित्य - सृजन की अभिलाषा को दबा दिया था । काफी समय तक वे अध्यापक की नौकरी खोजते रहे किन्तु मायूस रहे । उन्हें अध्यापन और साहित्य - सृजन का कार्य मजबूरी में छोड़ना पडा । इस विषय में उनकी पत्नी नैयर रज़ा का कहना है - "उन्हें फिल्मों में काम करने का कोई शौक नहीं था, मजबूरी थी । लिखना जानत थे । 1950 में अस्थायी रूप से आल इण्डिया में काम किया था । हालात ऐसे थे, करते क्या ? फिल्म लाइन पकड ली । फिल्मों में शोहरत है लेकिन सुकून नहीं है । वहाँ साहित्य पर काम का हर्जा होता है ।"16

डॉ० राही मासूम रज़ा ने अपने 35 साल के करियर में फिल्मों, नाटकों, गीत, पटकथा, संवाद आदि लिखना शुरु कर दिये थे । सन 1947 से 1948 के वर्ष राही जी के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं । उस समय सारा देश साम्प्रदायिकता की आग में जल रहा था । देश विभाजन के कारण गाँव, घर, परिवार उजड़ रहे थे । देश की इस दुर्गति से राही जी काफी चिंतित थे । इन घटनाओं को राही जी ने झेला है, भोगा है और एक भावुक

कवि, संवेदनशील लेखक अथवा उपन्यासकार ही ऐसी घटनाओं से प्रभावित हो सकता है । इसलिये उनके लगभग सभी उपन्यासों और कविताओं में ऐसी घटनाएं तथा परिस्थितियां देखने को मिलती हैं ।

इसी सन्दर्भ में सन 1962 में एक दिन कुँवर पाल सिंह ने बड़ी गम्भीरता से राही जी से कहा- "कब तक आप गुमनाम उपन्यास लिखते रहेंगे । क्यों नहीं एक गंभीर उपन्यास लिखते ? आपके पास जो शैली है, उसका उपयोग क्यों नहीं एक श्रेष्ठ रचना के लिये करते ? ..... और उसी की उपज है "आधा- गाँव "17 उसी मित्रता को निभाते हुए राही जी आधा गाँव उपन्यास अपने मित्र कुँवरपाल सिंह को समर्पित करते हुए लिखते हैं : "यह 'आधा-गाँव' अपने पूरे दोस्त,

'कुंवरपाल सिंह' को भेंट करता हूँ,
क्योंकि अगर उनका साथ न होता
तो शायद मैं यह कहानो न लिख पाता ।"18

डॉ० राही मासूम रज़ा स्वातंत्र्योत्तर श्रेष्ठ उपन्यासकारों में से एक हैं । भाषा के विषय में राही जी पाठक के मन पर जो छाप छोड़ते हैं बस देखते बनती है । उनकी भाषा अत्यधिक आकर्षित रही है, एक प्रकार से भाषा के जादूगर कहे जाते हैं डा० राही मासूम रजा । हिन्दी साहित्य जगत में राही जी की एक अदभुत भूमिका रही है । उर्दू साहित्य में भी काफी चर्चित रहे किन्तु हिन्दी साहित्य में जो प्रसिद्धि राही जी को मिली वैसी उर्दू साहित्य मे नहीं मिली ।

डा० राही मासमू रजा ने लगभग 300 फिल्मों के लिये संवाद, पटकथा तथा गीत लिखे । उनकी कई फिल्मों को एवार्ड भी दिये गये यथा : लम्हे, प्रेम कहानी, मैं तुलसी तेरे आँगन की, तवायफ आदि । इसके अतिरिक्त गोलमाल, अधा कानून, नरम - गरम, बिंदिया-बंदूक, जुदाई, मांग भरो सजना, लव एण्ड गौड, मिली, निकाह, जुर्माना तथा आलाप आदि । लम्हें राही जी की आखिरी फिल्म थी । 'मिली' राही जी की मनपसन्द फिल्मों में से एक थी ।

इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध टी० वी० धारावाहिक "महाभारत" की पटकथा डा० राही मासूम रजा ने लिखी जिसके निर्देशक बी० आर० चोपड़ा थे । महाभारत हिन्दू महाकाव्य पर आधारित था इस विषय में एक प्रसंग है - "जब बी० आर० चोपड़ा ने महाभारत धारावाहिक बनाने की घोषणा की और कहा कि इसके संवाद एवं पटकथा मैं डा० राही मासूम रजा से लिखवाऊंगा । राही उन दिनों व्यस्त थे उन्होंने चोपड़ा साहब से माफी माँगी । लेकिन एक महीने के बाद राहो को चोपड़ा साहब ने खतों का एक पैकेट भेजा, ये खत हिन्दुत्ववादी लोगों ने लिखे थे, इनमें लिखा था कि एक मुसलमान महाभारत के संवाद क्या लिखेगा ! उसे हमारे धर्म, संस्कृति, सभ्यता और इतिहास की क्या समझ है ? आप हमारा अपमान कर रहे हैं । राही जी की यह कमजोर नस थी, चोपडा जी ने वही पकड़ ली । राही ने तुरन्त घोषणा की कि 'महाभारत' मैं ही लिखूंगा और संकीर्ण लोगों को बताऊंगा कि इनसे ज़्यादा भारतीय सभ्यता और संस्कृति मैं जानता हूँ । राही ने 'महाभारत' लिखने के लिये आठ महीने परिश्रम किया । संस्कृत, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी में 'महाभारत' पर जो सामाग्री थी उसका अध्ययन किया और 8000 पृष्ठ के नोटस तैयार किये । व्यास जी ने तो 'महाभारत' को विद्वानों तक पहुँचाया, राही ने महाभारत को देश के कोने-कोने एवं संसार के अनेक लोगों में पहुँचाया ।"19

'महाभारत' के लिये राही जी को महान प्रसिद्धि मिली और ये भारत का सबसे अधिक देखा जाने वाला धारावाहिक बना । एक ही समय मे इसकी टी० आर० पी० छियासी प्रतिशत थी । जिसने सभी को चौंका दिया था । महाभारत की पटकथा लिखने से पहले तथा इसके बाद में भी राही को दोनों धर्मों हिन्दू और मुस्लिम ने डराया, धमकाया, किन्तु राही जी अपनी जगह अटल रहे क्योंकि राही जी ये जानते थे कि ये सब समय की गर्मी है और देखते-देखते महाभारत के संवाद लोक प्रिय हो गये । डा० राही मासूम रज़ा के दो धारावाहिक 'नीम का पेड़' और 'बहादुर शाह ज़फर' ने भी काफी प्रसिद्धि प्राप्त की

डॉ० राही मासूम रज़ा के कार्य लेखन को निम्न रूप से विभक्त किया जा सकता है -

उपन्यास साहित्य

काव्य-संग्रह

जीवनी

अन्य लेख एवं पत्र

उपन्यास साहित्य

आधा गाँव -

सन 1966 में लिखा गया राही जी का यह बहुचर्चित उपन्यास है । आधा गाँव शिया मुस्लिम समाज पर लिखा गया प्रथम आँचलिक उपन्यास है । इस उपन्यास के माध्यम से राही जी ने विभाजन के पूर्व एवं पश्चात की सामाजिक एवं मानसिक स्थिति का चित्रण बड़े ही मार्मिक ढंग से किया है । भारत-पाक विभाजन के समय गंगौली वासियों की व्यक्तिगत समस्याएं एवं उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का चित्रण करने मे राही जो सफल हुए हैं । आधा गाँव उपन्यास को लेकर काफी विवाद रहा कि यह एक अश्लील उपन्यास है और इसी कारण इस उपन्यास को पाठयक्रम के स्तर पर नहीं रखा गया । इस विषय में राही जी का कहना है - "मैं साहित्यकार हूँ मेरे पात्र यदि गीता बोलेंगे तो मैं गीता के श्लोक लिखूँगा । मैं नाजो साहित्यकार नहीं हूँ कि अपने पात्रों पर अपना हुक्म चलाऊँ ।"20

हिम्मत जौनपुरी - यह राही जी का एक लघु उपन्यास है । इसका प्रकाशन सन 1963 है । "हिम्मत जौनपुरी" उपन्यास में राही जी ने गाजीपुर के सामाजिक जीवन का चित्रांकन किया है । इसके अतिरिक्त राही जी ने एक ऐसे नवयुवक को अपना विषय बनाया है जो रोजी-रोटी की तलाश में शहर को ओर पलायन करता है और अपने गाँव, अपने वतन को याद करते-करते वहीं दम तोड़ देता है । इस उपन्यास के माध्यम से राही जी ने वैश्याओं के जीवन पर भी प्रकाश डाला है ।

ओस की बूँद - सन 1970 में लिखा गया राही जी का यह एक सशक्त उपन्यास है । उपन्यास का आरम्भ हिन्दू-मुस्लिम समस्याओं से होता है । इस उपन्यास की कथा हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिकता पर आधारित है । राजनीति को ढाल बना कर साम्प्रदायिक दंगों को हवा देने वाले हैं ये राजनेता जिनके द्वारा हिन्दू-मुस्लिम समस्या का बीज बोया गया है । "ओस की बूँद" शीर्षक के विषय में राही जी लिखते हैं - "ओस की बूँद और ये कहानी भी ओस की

बूँद थी जो धूप में उड गयी थी । ..... इसकी कहानी एक ऐसे मन्दिर के चारों ओर घूमती है जो एक मुसलमान के घर में है । उसकी वजह से शहर में फसाद होता है एक ढोंगी फकीर उस फसाद का फायदा उठाता है जिसकी नजर बहुत देर से कहानी की नायिका पर लगी हुई है । वह उससे बलात्कार करता है और फिर लोग उस फकीर को मार डालते हैं । यहाँ कहानी खत्म हो जाती है ।"2।

दिल एक सादा कागज - सन 1973 में यह उपन्यास दिल्ली से प्रकाशित हुआ था । इस उपन्यास के माध्यम से राही जी ने बम्बई के फिल्मी समाज की चर्चा की है जो एक दम दिखावा है जिसका असल जिन्दगी से कोई लेना-देना नहीं है । उपन्यास का नायक एक दुःखी पात्र है और उसके इस दुःख का कारण है विभाजन जिसमें उसका परिवार उससे बिछड़कर पाकिस्तान चला गया । उपन्यासकार ने नायक को लेखक बना कर बम्बई के फिल्मी दुनिया के लेखकों के बनावटी जीवन की ओर इंगित किया है । इस उपन्यास के माध्यम से राही जी ने फिल्मी वातावरण द्वारा समाज को सही दिशा दिखाने का प्रयत्न किया है ।

सीन : 75 - सन 1977 में लिखा गया यह अत्यंत प्रभावशली उपन्यास है । इस उपन्यास की कथा फिल्मी दुनिया से सम्बन्धित है । इस कहानी का नायक एक लेखक है जो अपनी फिल्मों के माध्यम से आम जनता को राजनीति के प्रति जागरूक करना चाहता है । यह मध्यम वर्ग के संघर्ष की कहानी है ।

टोपी शुक्ला - सन 1977 में प्रकाशित 161 पृष्ठों का यह एक लघु उपन्यास है । इस उपन्यास को राही जी उपन्यास न मानकर जीवनी स्वीकार करते हैं । इस उपन्यास की कथावस्तु अलीगढ़ युनिवर्सिटी के वातावरण पर आधारित है । लेखक ने इस उपन्यास के माध्यम से धर्म के नाम पर होने वाले भेद-भाव का पर्दाफाश किया है । उपन्यासकार इस कहानी के नायक द्वारा यह साबित करता है कि भारत में रहने वाले मुसलमान भारत के होते हुए भी भारत के नहीं हैं । वे पाकिस्तान के पक्ष में हैं । राही जी टोपी शुक्ला की भूमिका में लिखते हैं - " आधा गाँव में बेशुमार गालियाँ थी । मौलाना 'टोपी शुक्ला' में एक भी गाली नहीं है । परन्तु यह पूरा

उपन्यास एक गाली है । और मैं यह डंके की चोट पर बक रहा हूँ । यह उपन्यास अश्लील है- जीवन की तरह ।"22

कटरा बी आरजू - सन 1978 में लिखे गये इस उपन्यास की कहानी केवल इलाहबाद की एक छोटी सी बस्ती कटरे की ही कहानी नहीं बल्कि पूरे भारत देश में बसे हुए लोगों के अरमान और उनके टूटने की कहानी है । इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने स्थानीय नेतागीरी और उसके कारनामों पर प्रकाश डाला है । इस उपन्यास में लेखक ने गरीबी और अज्ञानता की ओर भी इशारा किया है । इसी का फायदा उठाकर कोई भी बड़ा आदमी या नेता शोषण करने में सफल होता है । आपातकालीन सरकार की तानाशाही द्वारा कटरा बस्ती के घरों के उजड़ने का मार्मिक चित्रण राही जी ने किया है ।

असंतोष के दिन - इस उपन्यास का प्रकाशन सन 1986 है । इस उपन्यास की कथावस्तु का केन्द्र बिन्दु बम्बई शहर है । इस पूरे उपन्यास में सम्प्रदाय के नाम पर हो रहे दंगों का चित्रण है । यहाँ केवल हिन्दू-मुस्लिम नही बल्कि हिन्दू-सिक्ख में भी साम्प्रदायिकता का भाव देखने को मिलता है । समाज के इस विभाजन ने राही जी को चिंतित कर दिया है । इस उपन्यास के माध्यम से लेखक साझा संस्कृति की बात करता है ।

नीम का पेड - सन 2003 में प्रकाशित यह उपन्यास राही मासूम रज़ा का अन्तिम उपन्यास है जो राही जी का मरणोपरान्त उपन्यास है । इस उपन्यास में नीम के पेड़ को प्रतीक बनाया गया है । यहाँ राजनीतिक दांव-पेंच हैं, स्वार्थ है और इन सबका साक्षी है नीम का पेड़ । लेखक ने लछमनपुर गाँव को माध्यम बनाकर पूरे भारत के राजनीतिक स्वार्थ का भांडा फोड किया है ।

जीवनी

छोटे आदमी की बड़ी कहानी - सन 1965 में इस जीवनी का प्रकाशन हुआ । जो जो परमवीर चक्र विजेता हवलदार अबदुल हमीद के चरित्र पर आधारित है । राही मासूम रज़ा को भारतीय होने पर गर्व है और वे प्रत्येक नागरिक को चाहे वो हिन्दू हो या मुस्लिम इस गर्व का हकदार मानते हैं । इस जीवनी के माध्यम से राही जी ने स्पष्ट किया है कि कोई भी नागरिक हिन्दू या मुसलमान होने से पहले वो एक भारतीय है । मुसलमान को अभारतीय कहने के सम्बन्ध में राही जी ने अपनी इस कृति में लिखा है - "रणभूमि की तरफ लपकने वालों में हिंदू भी और मुसलमान भी, फिर दोनों में फर्क क्या ह ? यदि एक भारतीय है तो दूसरा अभारतीय कैसे हो गया । यदि गल्ले को चोरबाज़ार में ले जाने वाले हिंदु बनिया भारतीय है तो पाकिस्तान के खिलाफ लड़ते हुए मारा जाने वाला अब्दुल हमीद अभारतीय कैसे हो सकता है ? यह लौजिक मेरी समझ में नहीं आता ।"23

काव्य-संग्रह

मैं एक फेरी वाला :-

सन 1978 में प्रकाशित 55 कविताओं का संग्रह है । इसमें लेखक के संवेदनशीलता के दर्शन होते हैं । इन कविताओं के माध्यम से लेखक अपने अनुभवों को व्यक्त करने में सफल हुआ है ।'मैं एक फेरी वाला' काव्य संग्रह की भूमिका में भारती जी लिखते हैं - "जब भी किसी तेवर वाले कवि-कलाकार या चिन्तक ने पूरे आन्तरिक बल से चुनौती दी है, बेलाग बेहिचक चोट की है तब अक्सर उसको उसका अजीब मूल्य चुकाना पड़ा है । हाथी के नीचे कुचला गंग, सूली पर चढ़ा मंसूर, देश से निर्वासित बायरन और शैली अमरीका से बहिष्कृत चार्ली चैपलिन, रूस में कुचला हुआ पास्तरनाक । राही कम्बख्त जब तनकर अपने आन्तरिक कवि सत्य को अपने चुल्लू-भर गंगाजल-लहू को अपने आखिरी हथियार की तरह लेकर उठ खड़ा होता है तो मुझे अपने इस प्यारे दोस्त पर जितना फख्र होता है, उतनी फिक्र भी होने लगती है ।"24

क्रान्ति कथा : 1857 :-

सर्वप्रथम यह महाकाव्य उर्दू में सन 1857 में लिखा गया । तत्पश्चात 1957 'क्रान्तिकथा' के नाम से प्रकाशित हुआ । सन 1999 में डा० कुँवरपाल सिंह ने इसका पुनः संपादन किया । इस महाकाव्य के अन्तर्गत राही जी ने अनेक महान हस्तियों का चित्रण किया है- रानी लक्ष्मी बाई, बहादुर शाह, मंगल पांडे, तात्या टोपे आदि । इसके अतिरिक्त स्त्री-पुरुष, किसान, कारीगर, हिन्दू-मुस्लिम सभी ने यह लड़ाई मिलकर लड़ी थी । इस एकता ने राही जी को अत्यन्त प्रभावित किया । इस महाकाव्य के माध्यम से राही जी ने स्त्री के शक्तिशाली रूप का भी वर्णन किया है । अंग्रजों की दुर्गति का भी चित्रण दर्शनीय है ।

ग़रीबे-शहर :-

यह उन कविताओं का संग्रह है जो राही जी के मित्रों के पत्रों तथा उनकी डायरी में लिखी हुई थीं । इस काव्य संग्रह में सन 1937-1968 के बाद की कविताएं मौजूद हैं ।

खुदा हाफ़िज़ कहने का मोड :- इस संग्रह में राही जी के द्वारा लिखे गये आलेख और खुली रचनाएं हैं जो 1962 से 1992 के बीच पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं । राही जी 'रविवार' (कलकत्ता) 'गंगा' और 'नवभारत' (दिल्ली) में नियमित रूप से लिखते थे । इसमें कई पत्र ऐसे हैं जिससे पता चलता है कि राही जी अलीगढ़ को और वहाँ के वातावरण को कभी नहीं भूले । वे अपने साथ किये गये अन्याय को भी कभी नहीं भूले । उन्हें अपने कुछ दोस्तों से शिकायत भी थी जो उनके पत्रों से पता चलता है । "उनसे मुझे बड़ी आशा थी कि वे इस अन्याय के विरु² मेरा साथ देंगे लेकिन उन्होंने मेरा प्रतिवेदन लिखने से भी मना कर दिया ।"25 इस संग्रह में लिखे गये पत्र एवं आलेख राही जी को समझने में काफी सहायक सि² होंगे ।

लगता है बेकार गये हम :-

राही जी की यह खुली चिटिठयों का संग्रह है । इसका प्रकाशन 1999 का है । जिसका संपादन कवर पाल सिहं जी ने किया है । इस संग्रह में राही

जी ने देश के प्रधान मंत्री से लेकर श्रीराम और अल्लाह मियाँ तक को पत्र लिखे हैं । पत्रात्मक शैली में राही जी ने अपने अनुभवों एवं विचारों को अभिव्यक्त किया है । उस समय की सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक समस्याओं का भी चित्रण राही जी ने इन पत्रों में किया है । यहाँ तक कि राही जी ने धर्म के ठेकेदारों एवं सुधारकों को भी कटघरे में लाकर खड़ा कर दिया है । इस संग्रह में हमारे देश की ऐसी कोई समस्या नहीं है जो राही जी से अछूती रह गयी हो । राही जी की बेचैनी सारे देश की बेचैनी है जो हमें विचार करने पर मजबूर कर देती है ।

इसके अतिरिक्त राही जी ने नाटकों के संवाद एवं पटकथा भी लिखी है । 'गूँगी जिन्दगी', तथा 'एक पैसे का सवाल है बाबा' राही जी के प्रसिद्ध नाटक है । इस विषय में डॉ० पांडुरंग चिलगर लिखते हैं - "वे अभिनय कला में भी पारंगत थे । उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में "गँगी ज़िन्दगी" नामक नाटक मचित किया था । उसमें उर्दू के प्रसिद्ध शायर जानिसार अख़्तर के बेटे जावेद अख़्तर (जो आज प्रसिद्ध फ़िल्मी हस्ती हैं) ने राही के इस नाटक में गूँगे बालक की भूमिका की थी । राही का दूसरा नाटक 'एक पैसे का सवाल है बाबा' प्रसिद्ध है ।"26

इस प्रकार राही जी ने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी लेखनी उठाई है । राही जी ने कहानियाँ भी लिखीं 'एम० एल० ए० साहब'1957, 'ज़लील अब्दुल बुआ' 1978, 'सपनों की रोटी' 1980 किन्तु राही जी को जो प्रसिद्धि उपन्यासों में मिली वह कहानी या नाटक में नहीं मिला ।

निष्कर्ष :-

निकर्षतः कहा जा सकता है कि डा० राही मासूम रज़ा ने हिन्दी जगत साहित्य में अपनी एक अलग छाप छोड़ी है । सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक कोई ऐसा पक्ष नहीं जिसके लिये राही जी ने आवाज़ न उठाई हो । वे बोले और डंके की चोट पर बिना लाग-लपेट के बोले । उन्होंने अपने उपन्यास साहित्य एवं कविताओं के माध्यम से हिंदू-मुस्लिम एकता को

स्थापित करने की बात कही । आतंकवाद एवं साम्प्रदायिकता के खिलाफ़ खड़े रहे । राही जी ने स्वयं को न कभी हिन्दू माना न मुस्लिम । वे एक सच्चे हिन्दुस्तानी रहे । उन्होंने गंगा-जमुनी सभ्यता को अपनी धरोहर माना । अंततः कहा जा सकता है कि डा० राही मासूम रज़ा ने अपने कृतित्व के माध्यम से हिन्दी साहित्य जगत को महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

संदर्भिका

1. मैं एक फेरी वाला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 60
2. मैं एक फेरी वाला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 46
3. डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में व्यक्त जीवन-दर्शन, डॉ० सुनन्दा मग्गीवार पृ० 16
4. डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में व्यक्त जीवन-दर्शन, डॉ० सुनन्दा मग्गीवार पृ० 17
5. डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में व्यक्त जीवन-दर्शन, डॉ० सुनन्दा मग्गीवार पृ० 05
6. डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में व्यक्त जीवन-दर्शन, डॉ० सुनन्दा मग्गीवार पृ० 18
7. प्रभाकर माचवे के उपन्यासों में समसामयिक दृष्टि, डॉ० मंज़ूर सैयद पृ० 17
8. डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में व्यक्त जीवन-दर्शन, डॉ० सुनन्दा मग्गीवार पृ० 22
9. शैली विज्ञान : संकल्पना एवं स्वरूप, डॉ० पांडुरंग चिलगर पृ० 63
10. डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में समकालीन सन्दर्भ, डॉ० शैलजा जायसवाल पृ० 20
11. लगता है बेकार गये हम, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 46
12. राही मासूम रज़ा : एक अध्ययन, डॉ० जिलेदार सिंह पृ० 31
13. डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में व्यक्त जीवन-दर्शन, डॉ० सुनन्दा मग्गीवार पृ० 53
14. डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में समकालीन सन्दर्भ, डॉ० शैलजा जायसवाल पृ० 24
15. डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में व्यक्त जीवन-दर्शन, डॉ० सुनन्दा मग्गीवार पृ० 53
16. डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में व्यक्त जीवन-दर्शन, डॉ० सुनन्दा मग्गीवार पृ० 26
17. डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में व्यक्त जीवन-दर्शन, डॉ० सुनन्दा मग्गीवार पृ० 23
18. डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में समकालीन सन्दर्भ, डॉ० शैलजा जायसवाल पृ० 25
19. राही मासूम रज़ा : एक अध्ययन, डॉ० जिलेदार सिंह पृ० 16
20. राही मासूम रज़ा : एक अध्ययन, डॉ० जिलेदार सिंह पृ० 14
21. राही मासूम रज़ा का रचना संसार, डॉ० रेहाना रिज़वी पृ० 18

22. टोपी शुक्ला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 05
23. डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में समकालीन सन्दर्भ, डॉ० शैलजा जायसवाल पृ० 45
24. मैं एक फेरी वाला, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 09
25. खुदा हाफ़िज़ कहने का मोड़, डॉ० राही मासूम रज़ा पृ० 13
26. शैली विज्ञान : संकल्पना एवं स्वरूप, डॉ० पांडुरंग चिलगर पृ० 74